

॥ श्री सुदर्शन अष्टक ॥

प्रतिभटश्रेणि भीषण वरगुणस्तोम भूषण  
जनिभयस्थान तारण जगदवस्थान कारण ।  
निखिलदुष्कर्म कर्शन निगमसद्धर्म दर्शन  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

शुभजगद्रूप मण्डन सुरगणत्रास खण्डन  
शतमखब्रह्म वन्दित शतपथब्रह्म नन्दित ।  
प्रथितविद्वत् सपक्षित भजदहिर्बुध्न्य लक्षित  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

स्फुटतटिज्जाल पिञ्जर पृथुतरज्वाल पञ्जर  
परिगत प्रत्नविग्रह पतुतरप्रज्ञ दुर्यह ।  
प्रहरण ग्राम मण्डित परिजन त्राण पण्डित  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

निजपदप्रीत सद्रण निरुपधिस्फीत षड्गुण  
निगम निर्व्यूढ वैभव निजपर व्यूह वैभव ।  
हरि हय द्वेषि दारण हर पुर प्लोष कारण  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

दनुज विस्तार कर्तन जनि तमिस्रा विकर्तन  
दनुजविद्या निकर्तन भजदविद्या निवर्तन ।  
अमर दृष्ट स्व विक्रम समर जुष्ट भमिक्रम  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

प्रथिमुखालीढ बन्धुर पृथुमहाहेति दन्तुर  
विकटमाय बहिष्कृत विविधमाला परिष्कृत ।  
स्थिरमहायन्त्र तन्त्रित दृढ दया तन्त्र यन्त्रित  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

महित सम्पत् सदक्षर विहितसम्पत् षडक्षर  
षडरचक्र प्रतिष्ठित सकल तत्त्व प्रतिष्ठित ।  
विविध सङ्कल्प कल्पक विबुधसङ्कल्प कल्पक  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

भुवन नेत्र त्रयीमय सवन तेजस्त्रयीमय  
निरवधि स्वादु चिन्मय निखिल शक्ते जगन्मय ॥  
अमित विश्वक्रियामय शमित विश्वगभयामय  
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥

फलश्रुति

द्विचतुष्कमिदं प्रभूतसारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतम् ।  
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्ग धुर्य गुप्तः ॥

॥इति श्री सुदर्शनाष्टकं समाप्तम् ॥